विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

जून 2026

जून माह पत्रिका

विश्व रक्तदान दिवस

रक्तदान करें,
जीवनदान दें।
आपका एक
कदम किसी की
ज़िंदगी बचा सकता है।

विश्व पर्यावरण दिवस

आओ मिलकर
पर्यावरण की रक्षा करें,
धरती को हरा-भरा
और स्वच्छ बनाएं।

योग दिवस

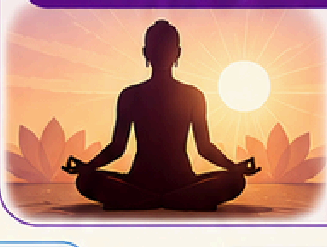

योग अपनाएँ,
स्वस्थ जीवन
की ओर बढ़ें।

हमारी गतिविधियाँ

समर कैम्प समापन समारोह

समर कैम्प के सफल समापन पर बच्चों को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

उदयन स्टूडियों उदघाटन

उदयन स्टूडियो का विधिवत उद्घाटन किया गया। यह स्टूडियो विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का सशक्त माध्यम बनेगा।

Contact Info

0120-4545608
WEBSITE: ssmnoida.in
GMAIL: ssm.noida@gmail.com

गर्मी में रखें विशेष ध्यान

- अधिक से अधिक पानी पिएं।
- हल्का और पौष्टिक भोजन करें।
- धूप में बाहर जाते समय टोपी/छाता का उपयोग करें।
- स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर, उत्तर प्रदेश

स्वयमेव मृगेन्द्रता

सरस्वती शिशु मंदिर

सा विद्या या विमुक्तये

विद्या भारती

सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

जून 2026

मासिक ई-पत्रिका, जून - 2026

ज्ञानोदय (अंक - 68)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री कृष्ण कुमार बंसल

श्री राजीव नाईक

श्री नितीश आर्य

श्री जितेन्द्र कुमार गौतम

श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेंद्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)

श्री दीपक कुमार

श्रीमती तरुणा सक्सेना

ब० अनु सिंह

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विद्या • सेवा • संस्कार

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- कौशलों की शिक्षा: बचपन से शुरुआत के लाभ
- विश्व चिकित्सक दिवस
- बाल गंगाधर तिलक
- चंद्रशेखर आज़ाद जयंती
- कारगिल विजय दिवस
- विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस
- गुरु पूर्णिमा
- समर कैंप समापन
- वायु शुद्धि हवन
- उदयन स्टूडियो उद्घाटन
- विश्व योग दिवस
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

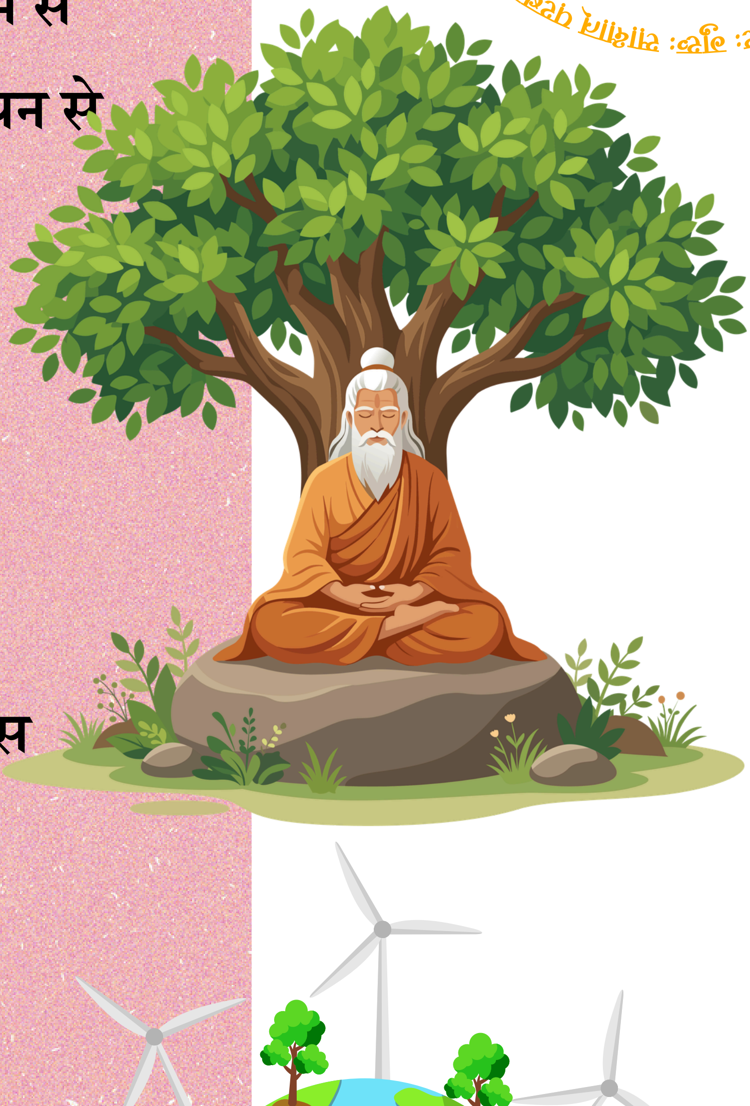

संपादकीय

गर्मी की छुट्टियाँ

गर्मी की छुट्टियाँ हर विद्यार्थी के जीवन का सबसे आनंददायक समय होता है। मई के महीने में जब तेज़ धूप और गर्मी बढ़ती है तब ऐसे में स्कूलों में छुट्टियाँ घोषित होती हैं। ये लगभग पैतालिस दिनों की छुट्टियाँ बच्चों को पढ़ाई के रोज़ होने वाले तनाव से राहत देती हैं साथ परिवार में घुलने मिलने का अवसर भी प्राप्त होता है।

गर्मी की छुट्टियों का सबसे बड़ा आकर्षण है घूमने जाना। कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ पहाड़ों पर जाते हैं। शिमला, मनाली, मसूरी और नैनीताल जैसी ठंडी जगहों पर जाकर उन्हें गर्मी से राहत मिलती है। कुछ बच्चे ननिहाल या दादाजी-दादीजी के गाँव भी जाते हैं। वहाँ आम, लीची और तरबूज खाते हैं, नदी में नहाते हैं और अपने परिवार के विस्तृत स्वरूप से परिचय पा का उनके साथ खूब मस्ती करते हैं। मगर कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके पास मौका नहीं मिल पाता कहीं बाहर जाने का या हर साल गर्मी की छुट्टियों में घर से बाहर जा सकने का तो इनके लिए विद्यालय हर एक वर्ष समर कैंप का आयोजन करता है जिसमें तरह-तरह के कौशल विकास से संबंधित खेल मनोरंजन विद्यालय के प्रांगण में करवाए जाते हैं यह एक सुंदर आयोजन होता है जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायता होती है। घर पर रहने वाले बच्चों के लिए भी ये समय खास होता है। वे देर तक सोते हैं, कार्टून देखते हैं, नए खेल खेलते हैं और मनपसंद खाना खाते हैं। माताएँ इस दौरान बच्चों के लिए ठंडाई, लस्सी, आम का पना और आइसक्रीम बनाती हैं। कुछ बच्चे इस समय ड्राइंग, डांस, म्यूजिक या कंप्यूटर की क्लास भी ज्वाइन करते हैं ताकि छुट्टियाँ व्यर्थ न जाएँ। माता-पिता बच्चों को पुस्तकालय ले जाते हैं और अच्छी किताबें पढ़ने से उनके बौद्धिक विकास में सहायता मिलती है ।

गर्मी की छुट्टियाँ केवल आराम के लिए नहीं होतीं, बल्कि ये परिवार के साथ समय बिताने का अवसर भी देती हैं। माता-पिता के साथ बैठकर बातें करना, कहानियाँ सुनना और साथ में खाना खाना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। ये छुट्टियाँ ही हमें सिखाती हैं कि मेहनत के बाद आराम भी जरूरी है।

हालाँकि छुट्टियाँ समाप्त होने पर थोड़ा दुख होता है, लेकिन नए सत्र के लिए नई ऊर्जा मिलती है। सच में गर्मी की छुट्टियाँ जीवन की सबसे मीठी यादें बन जाती हैं।

अन्नू सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

नवीकरणीय ऊर्जा की ओर भारत के कदम

पश्चिम एशिया में पिछले एक माह से संघर्ष जारी है। इसके खत्म होने के अभी कोई आसार नहीं दिख रहे हैं, क्योंकि ईरान-इजराइल-अमेरिका यह सैन्य युद्ध अब आर्थिक युद्ध में बदल चुका है। ईरान ने समुद्री व्यापार मार्ग 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' को बंद कर दिया है जिससे विश्व को ज्यादातर पेट्रोल और पेट्रोलियम उत्पाद निर्यात किया जाता है। यह स्वाभाविक है कि इससे दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होती, लेकिन इसका प्रभाव दुनिया की उन अर्थव्यवस्थाओं पर ज्यादा हो रहा है जो केवल पारम्परिक ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भर है। भारत पर भी इस सैन्य और आर्थिक युद्ध का व्यापक प्रभाव देखने को मिल रहा है। लेकिन भारत पिछले एक दशक से हीं इस संभावित संकट से निपटने की तैयारी कर रहा था। भारत अब नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नेतृत्वकारी भूमिका में आ चुका है। भारत ने 2025 में रिकॉर्ड 6.3 गीगावाट पवन टर्बाइन स्थापित किए, जो पिष्ठले वर्ष की तुलना में 85 प्रतिशत अधिक है। ब्लूमबर्गएनईएफ के अनुसार, इससे भारत अमेरिका और जर्मनी को पीछे छोड़कर 2025 में चीन के बाहर सबसे बड़ा पवन ऊर्जा बाजार बन गया। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में अनुसार, भारत में पवन ऊर्जा क्षमता में वृद्धि का एक प्रमुख कारण बहु-प्रौद्योगिकी आधारित जटिल स्वच्छ ऊर्जा नीलामी का उदय रहा है। इन नीलामियों में विकासकर्ताओं को दो या दो से अधिक नवीकरणीय प्रौद्योगिकियों सौर, पवन और ऊर्जा भंडारण को एकीकृत करना आवश्यक होता है, और अक्सर ये नीलामियां अधिक स्थिर और विश्वसनीय स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करने के लिए आकार में बड़ी होती हैं।

पवन ऊर्जा के बाद दूसरी सबसे सुरक्षित नवीकरणीय ऊर्जा सौर ऊर्जा है। इस दिशा में चीन और भारत के उल्लेखनीय प्रगति को एक्स पर साझा करते हुए टेस्ला के संस्थापक एलन मस्क ने लिखा कि 'सौर ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा है।' साल 2025 में भारत ने चीन के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा सोलर प्लान लगाए। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, **31 मार्च, 2026 तक भारत की सौर ऊर्जा क्षमता 150 गीगावाट से अधिक हो गई है**, जो नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वित्त वर्ष 2025-26 में देश ने रिकॉर्ड 44 गीगावाट से अधिक नई सौर क्षमता जोड़ी, जिससे कुल क्षमता लगभग 150.26 गीगावाट तक पहुंच गई। बड़े पैमाने की परियोजनाओं और छतों पर सौर पैनल लगाने से प्रेरित इस तीव्र वृद्धि ने भारत को 2026 में विश्व के दूसरे सबसे बड़े सौर बाजार के रूप में स्थापित कर दिया है।

देवेन्द्र शर्मा
प्रधानाचार्य
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

आज के बदलते परिवेश में Voice Over और अन्य विशेषज्ञ कौशलों की शिक्षा: बचपन से शुरुआत के लाभ

आज का युग "Content का युग" है। मोबाइल, YouTube, Reels, Podcast, Online Class - हर जगह आवाज़ और प्रस्तुति ही पहचान बना रही है। ऐसे में सिर्फ़ पढ़ाई नहीं, **Voice Over, Anchoring, Video Editing, Public Speaking** जैसे विशेषज्ञ कौशल भी उतने ही ज़रूरी हो गए हैं।

आज के परिवेश में ये कौशल कितने महत्वपूर्ण हैं?

पहले डॉक्टर, इंजीनियर, वकील ही "करियर" माने जाते थे। अब तस्वीर बदल गई है और लगातार बदलती जा रही है। बोलने लिखने को हुनर और विशेषज्ञता माना जा रहा है।

1. **Digital Economy:** YouTube, Podcast, Audiobook, E-learning, Advertisement - हर जगह Professional Voice की मांग है। एक अच्छा Voice Artist महीने में 30 हजार से 2 लाख तक कमा सकता है।
2. **Communication - Power:** IAS Interview हो या Company की Presentation, जो अपनी बात प्रभावी ढंग से रखता है वही आगे बढ़ता है। Voice Over से यही Confidence आता है।
3. **Branding का ज़माना:** स्कूल, कोचिंग, बिज़नेस - सबको अपने लिए Video और Audio Content चाहिए। जो बोलना और दिखाना जानता है, उसकी मांग सबसे ज़्यादा है।
4. **AI का दौर:** AI आवाज़ बना सकता है, पर इंसानी भाव, उतार-चढ़ाव और कहानी कहने की कला नहीं दे सकता। इसलिए असली Voice Artist की Value और बढ़ गई है।

सीधे शब्दों में - **"अगर आपको बोलना और दिखाना आता है, तो दुनिया आपकी सुनती है।**

अगर ये शिक्षा बचपन से दी जाए तो क्या लाभ रहेंगे?

बचपन सीखने की सबसे उर्वरक ज़मीन मानी गई है। अगर 6-7 साल की उम्र से ही बच्चे को Studio, Mic और Camera से दोस्ती करा दी जाए तो:

कौशल* *बचपन से सीखने पर फायदा

1. Communication Skills - हिचकिचाहट खत्म। बच्चा बिना डरे मंच पर, क्लास में, Interview में बोल पाता है।

2. Confidence + Personality - अपनी आवाज़ सुनकर, Video देखकर बच्चा खुद को सुधारता है। Self-esteem बढ़ता है।

3. भाषा और उच्चारण - Voice Over के लिए शुद्ध हिंदी, अंग्रेज़ी, Pronunciation पर काम होता है। भाषा मजबूत होती है।

4. रचनात्मकता - Creativity - Storytelling, Script लिखना, भाव देना - बच्चे का दिमाग Imagination से भर जाता है।

5. Tech Skills - Mic, Camera, Editing Software सीखने से बच्चा Technology से डरता नहीं, उसे इस्तेमाल करने में दक्ष होता है।

6. Career Option - 10वीं-12वीं तक आते-आते बच्चा Freelancer बन सकता है। YouTube Channel, School News Anchor बन सकता है।

7. एकाग्रता और अनुशासन - Recording के लिए 2-3 बार Retake करना पड़ता है। इससे धैर्य और Perfection आता है।

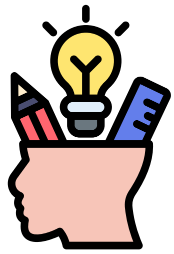

बच्चे का समग्र विकास कैसा होगा?

बचपन से Audio-Video की शिक्षा सिर्फ़ "Career" नहीं बनाती, वो बच्चे को "Complete Human" बनाती है।

1. मानसिक विकास: स्क्रिप्ट याद करना, भाव समझना, Tone बदलना - दिमाग तेज़ होता है। Memory और Focus बढ़ता है।

2. भावनात्मक विकास: जब बच्चा दुख, गुस्सा, खुशी वाली कहानी को आवाज़ देता है, तो Empathy सीखता है। वो दूसरों की भावना समझने लगता है।

3. सामाजिक विकास: Group Podcast, Anchor बनने से Teamwork आता है। बच्चा Leader बन सकता है व्यावहारिक दुनिया को दिशा दे सकता है। साथ ही Stage Fear खत्म होता है।

4. भविष्य के लिए तैयारी: आगे चलकर चाहे वो Doctor बने या Engineer, उसकी Presentation Skill उसे बाकियों से अलग कर देगी।

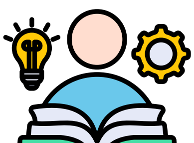

अगर एक पंक्ति में कहें तो - "जो बच्चा 10 साल की उम्र में माइक पकड़ लेता है, वो 20 साल की उम्र में दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।"

2. भावनात्मक विकास: जब बच्चा दुख, गुस्सा, खुशी वाली कहानी को आवाज़ देता है, तो Empathy सीखता है। वो दूसरों की भावना समझने लगता है।

3. सामाजिक विकास: Group Podcast, Anchor बनने से Teamwork आता है। बच्चा Leader बन सकता है व्यावहारिक दुनिया को दिशा दे सकता है। साथ ही Stage Fear खत्म होता है।

4. भविष्य के लिए तैयारी: आगे चलकर चाहे वो Doctor बने या Engineer, उसकी Presentation Skill उसे बाकियों से अलग कर देगी।

अगर एक पंक्ति में कहें तो - "जो बच्चा 10 साल की उम्र में माइक पकड़ लेता है, वो 20 साल की उम्र में दुनिया का ध्यान खींच लेता है।"

निष्कर्ष:

अव्यावहारिक शिक्षा से उबरने और भीड़ से अलग अपनी सूझ बुझ व कौशल से पहचान बनाने का भी है। नई शिक्षा अर्थात् "सीखो, बनाओ और दुनिया को दिखाओ"।

आज के बदलते परिवेश में Voice Over, Anchoring, Content Creation ये "Extra Activity" नहीं रहे। ये 21वीं सदी का Basic Skill बन गए हैं। अगर स्कूल इनकी शिक्षा बचपन से दें, तो हम सिर्फ़ Degree वाले नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी, रचनात्मक और रोज़गार-योग्य नागरिक तैयार करेंगे।

क्योंकि आने वाला समय उन्हीं का है जो सिर्फ़ सुनते नहीं, अपनी कहेंगे भी।

सारिका सिंह
एक्जीक्यूटिव हेड
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व चिकित्सक दिवस

1. प्रस्तावना

विश्व चिकित्सा दिवस चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्यकर्मियों और वैज्ञानिकों के योगदान को सम्मान देने के लिए मनाया जाता है। स्वस्थ जीवन के लिए चिकित्सा सेवाओं का महत्व अत्यंत आवश्यक है।

2. विश्व चिकित्सा दिवस का उद्देश्य

चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत लोगों के योगदान को सम्मान देना। समाज में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाना। लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना। चिकित्सा विज्ञान के विकास और उसके महत्व को समझाना।

3. चिकित्सा विज्ञान का महत्व

चिकित्सा विज्ञान ने मानव जीवन को सुरक्षित और स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक उपचार पद्धतियों से कई गंभीर बीमारियों का इलाज संभव हुआ है। नई तकनीकों और शोधों ने स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाया है। चिकित्सा सुविधाओं ने जीवन प्रत्याशा बढ़ाने में योगदान दिया है।

4. डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों का योगदान

डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी दिन-रात मरीजों की सेवा करते हैं। महामारी और आपदा के समय उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। वे मानवता की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनकी निस्वार्थ सेवा समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

5. स्वास्थ्य जागरूकता का महत्व

संतुलित आहार और नियमित व्यायाम अपनाने पर बल दिया जाता है। स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वास्थ्य की देखभाल का संदेश दिया जाता है। समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराने के लिए प्रेरित किया जाता है। टीकाकरण और रोगों की रोकथाम के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाती है।

6. निष्कर्ष

विश्व चिकित्सा दिवस हमें स्वास्थ्य के महत्व को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह दिवस चिकित्सा क्षेत्र के सभी कर्मियों के प्रति सम्मान व्यक्त करने का दिन है। हमें स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान देना चाहिए। चिकित्सा सेवाओं और स्वास्थ्यकर्मियों के प्रति सदैव सम्मान और आभार व्यक्त करना चाहिए।

अंजली शर्मा
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार और राष्ट्रवादी नेता थे। उनका जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में हुआ था। उनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक संस्कृत के विद्वान और शिक्षक थे। तिलक बचपन से ही मेधावी, साहसी और देशभक्त थे।

बाल गंगाधर तिलक ने अपनी शिक्षा पुणे में प्राप्त की और गणित विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने "केसरी" (मराठी) और "मराठा" (अंग्रेज़ी) नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन शुरू किया। इन पत्रों के माध्यम से उन्होंने अंग्रेज़ी शासन की नीतियों का विरोध किया और जनता को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया।

तिलक का प्रसिद्ध नारा था, "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।" यह नारा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणास्रोत बन गया। उन्होंने गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव को सार्वजनिक रूप से मनाने की परंपरा शुरू की, जिससे लोगों में एकता और राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित हुई।

बाल गंगाधर तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्हें "लोकमान्य" की उपाधि जनता ने उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए दी थी। अंग्रेज़ सरकार ने उन्हें कई बार जेल भेजा, लेकिन उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। भारत की स्वतंत्रता के लिए उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। आज भी वे युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

आराधना सिंह
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

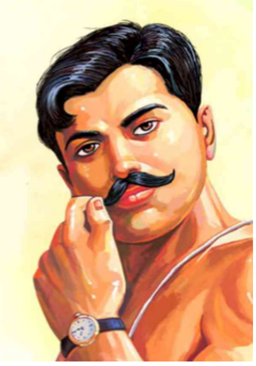

चंद्रशेखर आज़ाद जयंती

भारत के महान क्रांतिकारी अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद की जयंती हमें देशभक्ति, साहस और आत्मसम्मान की प्रेरणा देती है। उनका जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के भावरा (वर्तमान अलीराजपुर) में हुआ। बचपन से ही उनमें अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम था।

असहयोग आंदोलन के दौरान गिरफ्तारी पर जब उनसे नाम पूछा गया, तो उन्होंने निर्भीक होकर कहा—"नाम: आज़ाद, पिता का नाम: स्वतंत्रता और निवास: जेल।" तभी से वे पूरे देश में चंद्रशेखर आज़ाद के नाम से प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया और अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व किया। उनका दृढ़ संकल्प था कि वे कभी अंग्रेज़ों के हाथ जीवित नहीं पकड़े जाएँगे। 27 फ़रवरी 1931 को उन्होंने अपने इस वचन को निभाते हुए मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा देशप्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि साहस, अनुशासन, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा में दिखाई देता है। आज के विद्यार्थियों के लिए उनका जीवन एक प्रेरणा है कि वे ईमानदारी, परिश्रम और राष्ट्रसेवा की भावना को अपने जीवन का आधार बनाएँ व चरित्रवान बनें, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलें तथा अपने ज्ञान, परिश्रम और संस्कारों से राष्ट्र के विकास में योगदान दें।

अन्नु सिंह
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

कारगिल विजय दिवस

"कारगिल विजय दिवस" भारत के वीर सैनिकों के अदम्य साहस, पराक्रम और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। यह दिवस प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को पूरे देश में गर्व और सम्मान के साथ मनाया जाता है। इसी दिन वर्ष 1999 में भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त कर दुश्मनों को भारतीय सीमा से खदेड़ दिया था। इस ऐतिहासिक जीत की स्मृति में हर वर्ष कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है।

सन् 1999 में पाकिस्तान समर्थित घुसपैठियों ने जम्मू-कश्मीर के कारगिल क्षेत्र की कई ऊँची चोटियों पर अवैध रूप से कब्ज़ा कर लिया था। भारतीय सेना ने "ऑपरेशन विजय" चलाकर कठिन परिस्थितियों में अद्भुत साहस और वीरता का परिचय दिया। बर्फ से ढकी ऊँची पहाड़ियों, कठिन मौसम और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद हमारे सैनिकों ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना दुश्मनों को परास्त किया और भारत की भूमि को सुरक्षित कराया।

कारगिल युद्ध में अनेक वीर सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी वीरता, त्याग और देशप्रेम सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेंगे। इस अवसर पर पूरे देश में शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है तथा उनके परिवारों के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विभिन्न संस्थानों में देशभक्ति से जुड़े कार्यक्रम, भाषण, निबंध प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक आयोजन किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं में राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और देशसेवा की भावना जागृत की जाती है।

कारगिल विजय दिवस हमें यह संदेश देता है कि देश की सुरक्षा और सम्मान सर्वोपरि है। हमारे सैनिक दिन-रात सीमाओं पर रहकर हमारी रक्षा करते हैं, इसलिए हमें उनके प्रति सदैव सम्मान और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। साथ ही, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमें राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

रचना प्रजापति
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

"वसुधैव कुटुम्बकम" — पूरी धरती हमारा परिवार है

सुबह उठकर जो पहली साँस लेते हैं, वो पेड़ों का दिया हुआ ऑक्सीजन है। जो पानी पीते हैं, वो नदियों-पहाड़ों की देन है। जो खाना खाते हैं, वो मिट्टी ने उगाया है। फिर भी हम प्रकृति को 'for granted' ले लेते हैं। विश्व प्रकृति दिवस हर साल 28 जुलाई को हमें झकझोरने आता है कि रुकिए, सोचिए—हमने अपनी धरती के लिए आखिर किया क्या है?

प्रकृति संकट में है, और हम भी

1. जलवायु परिवर्तन: पिछले 100 साल में धरती का तापमान 1.1°C बढ़ा है। नतीजा—बेमौसम बारिश, भयंकर गर्मी, सूखा।

2. जैव विविधता का नुकसान: WWF के अनुसार 1970 से अब तक 69% वन्यजीव आबादी घट गई है। बाघ, हाथी, गौरैया—सब खतरे में।

3. प्रदूषण: दिल्ली-मुंबई जैसे शहरों में AQI 300 पार कर जाता है। गंगा-यमुना में फैक्ट्री का कचरा, समुद्र में तेल रिसाव आम बात हो गई है।

भारत और प्रकृति का नाता

हमारी संस्कृति में प्रकृति हमेशा पूज्य रही है। पीपल को देवता माना, नदियों को माँ कहा, नागपंचमी पर सर्प को दूध पिलाने की मान्यता। चिपको आंदोलन की गौरा देवी ने पेड़ों से चिपककर जंगल बचाए थे। बिश्नोई समाज आज भी हिरणों के लिए जान दे देता है। हमें बस वो संस्कार दोबारा जगाने हैं।

*** इंसान का लालच नहीं है।" प्रकृति से हम सिर्फ लेना नहीं, देना भी सीखें।**

क्योंकि प्रकृति नहीं बचेगी, तो हम भी नहीं बचेंगे। और जब प्रकृति मुस्कुराएगी, तभी हमारा कल सुनहरा होगा।

भावना शर्मा
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

गुरुपूर्णिमा

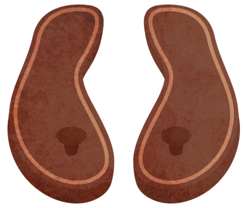

"गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना सम्मान नहीं।"

भारत की संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत ऊँचा माना गया है। गुरु पूर्णिमा इसी महान गुरु-शिष्य परंपरा को समर्पित एक पावन पर्व है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन ज्ञान, संस्कार और जीवन के सही मार्ग का प्रकाश देने वाले गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

गुरु पूर्णिमा का विशेष संबंध महर्षि वेदव्यास जी से है। उन्होंने वेदों का संकलन किया, महाभारत जैसे महान ग्रंथ की रचना की तथा अनेक पुराणों की रचना करके भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाया। इसलिए इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। गुरु केवल पुस्तक का ज्ञान नहीं देते, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। वे हमारे भीतर आत्मविश्वास, अनुशासन, नैतिकता, सेवा, करुणा और राष्ट्रप्रेम जैसे गुणों का विकास करते हैं। माता-पिता हमें जन्म देते हैं, परंतु गुरु हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और हमें जीवन की सही दिशा दिखाते हैं।

आज के आधुनिक युग में शिक्षा के अनेक साधन उपलब्ध हैं, फिर भी गुरु का महत्व कम नहीं हुआ है। तकनीक हमें जानकारी दे सकती है, लेकिन सही और गलत का विवेक, चरित्र निर्माण तथा जीवन के मूल्य केवल एक सच्चा गुरु ही सिखा सकता है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर विद्यालयों, आश्रमों और विभिन्न संस्थानों में गुरु वंदन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन, प्रवचन और सम्मान समारोह आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

गुरु पूर्णिमा हमें यह संदेश देती है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए गुरु का सम्मान, उनके प्रति श्रद्धा और उनके बताए मार्ग पर चलना अत्यंत आवश्यक है। सच्चे गुरु का आशीर्वाद जीवन को प्रकाशमय बना देता है।

"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

शशि किरण
आचार्या
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

उदयन स्टूडियो में भैया-बहनों का प्रथम दिन का अनुभव

पहले दिन जब मैं स्टूडियो में गई तो मुझे पता नहीं था कि हम कहां जा रहे हैं। जैसे-जैसे मैं स्टूडियो की तरफ जा रही थी वैसे-वैसे मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी कि हम जा कहां रहे हैं। मेरे साथ मेरे चार सहपाठी भी थे और वह भी उत्सुक थे। मैं और मेरे सहपाठी बात करते हुए स्टूडियो के पास पहुंच गए थे ,जूते उतार कर मैं और मेरे सहपाठी स्टूडियो के अंदर गए हमने सोचा कि हमारे विद्यालय में इतना सुंदर स्टूडियो भी बन सकता है फिर हमने अपनी अध्यापिका का इंतजार किया फिर थोड़ी देर बाद अध्यापिका आई और उन्होंने हमें कुछ बातें बताईं। जैसे की अध्यापिका ने हमें बताया बोलने से पहले हमें गहरी सांस लेनी चाहिए और बोलते समय बिल्कुल घबराना नहीं चाहिए। हमारे स्टूडियो वाली मैम का नाम सारिका पंकज है। जिस दिन हम गए थे उस दिन हमारा एक्टिविटी डे था।

धन्यवाद

लवी शर्मा (पंचम ए)

हमारा शनिवार को एक्टिविटी का दिन था। मैं और हमारे चारों सहपाठियों को स्टूडियो में जाने को बोला गया फिर हम चारों सहपाठी बहुत उत्सुक हुए। तत्पश्चात हम बातें करते हुए स्टूडियो की तरफ जाने लगे स्टूडियो पहुंच गए। हमें स्टूडियो बहुत सुंदर और आकर्षक लगा। हम फिर सारिका मैम के साथ स्टूडियो के अंदर गए। हमें स्टूडियो में बहुत अच्छा लगा , क्योंकि वहां पर बहुत शांति थी फिर हमें मैम ने अपनी आवाज record कर के सुनाई और हमें कुछ मुख्य बातें बताईं जब उन्होंने अपनी आवाज हमें सुनाई तो हमें उनकी आवाज बहुत अच्छी लगी फिर उन्होंने हमें एक किताब दी हमने उसे किताब को पढ़ा उसके बाद मैं ने हमारी वीडियो बनाई गई। जिस से हमें बहुत अच्छा लगा।

मैम बहुत सरल स्वभाव की थी तो यह था मेरा स्टूडियो में प्रथम दिन।

धन्यवाद

राजपूत उर्वी (पंचम ए)

आज मैं आपको मेरा स्टूडियो में जाने का अनुभव बताने जा रही हूं। दिन शनिवार की बात है इस दिन हमारा एक्टिविटी डे रहता है। मैं अपनी कक्षा में थी और हमारी आचार्य ने हमें लिखित कार्य दिया था तभी अचानक से हमारी कक्षा में एक आचार्य आई और हमारी कक्षा में से पांच बच्चों को ले गई। उन पांचो बच्चों में मैं भी थी। हमें पता नहीं था कि हम कहां जा रहे हैं परंतु कुछ समय बाद जब हमें पता चला कि हम लोग स्टूडियो जा रहे हैं तो हम अति प्रसन्न हुए और मुझे भी अति प्रसन्नता हुई। क्योंकि मैं भी प्रथम बार स्टूडियो में जा रही थी, मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। जब हम स्टूडियो की तरफ गए तो हमने जाने से पहले अपने जूते को एक लाइन में लगा दिया। तत्पश्चात हम स्टूडियो में गए स्टूडियो के अंदर जाते ही ऐसे लगा मानो कि मैं किसी शांत जगह पर हूं क्योंकि स्टूडियो के अंदर बहुत ही शांति थी। उसके बाद स्टूडियो में मैं और बच्चे भी देखा।वहां की आचार्य बहुत अच्छी और सरल स्वभाव की थी। उसके बाद उन्होंने हमें दो दो पंक्ति पढ़ने को कहा फिर हमसे पहले से आए हुए बच्चों की रिकॉर्डिंग की गई आवाज हमें सुनाई गई और बताया गया कि हम उन दो पंक्तियों को ऐसे ही पढ़ेंगे फिर हमारी भी रिकॉर्डिंग हुई अंततः हमने आचार्य से अनुरोध किया कि वह हमें हमारी रिकॉर्डिंग की गई आवाज सुना दे हमें सुनाया गया और बहुत अच्छा लगा तो बस यही था मेरा स्टूडियो में जाने का अनुभव।

धन्यवाद

नंदिनी राय (पंचम ए)

स्टूडियो रूम का अनुभव मेरे लिए बहुत अच्छा था वहां हमें मैं भी मिली जो बहुत ही अच्छे स्वभाव की थी। स्टूडियो में जाने से पहले हमें आचार्य ने कहा कि हम जूते बाहर उतार कर लाइन से रखें।उन्होंने पहले एक किताब पढ़ाई और फिर रिकॉर्डिंग की उन्होंने कहा कि मैंने अच्छा बोला है और बाकी बच्चों से भी मुझे फॉलो करने के लिए बोला जिसे सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई सभी बच्चों की रिकॉर्डिंग होने के बाद हम कक्षा में वापस आ गए।

धन्यवाद

तृषा शर्मा (पंचम ए)

समर कैंप समापन

विश्व पर्यावरण दिवस
(वायु शुद्धि हवन)
समर कैंप समापन समारोह
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
विश्व पर्यावरण दिवस
(वायु शुद्धि हवन)
समर कैंप समापन समारोह

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
विश्व पर्यावरण दिवस

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
विश्व पर्यावरण दिवस
(वायु शुद्धि हवन)

सहयोग - भारत विकास परिषद
विश्व पर्यावरण दिवस
(वायु शुद्धि हवन)
समर कैंप समापन समारोह

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
विश्व पर्यावरण दिवस

विद्या भारती

विश्व पर्यावरण दिवस
विद्या भारती

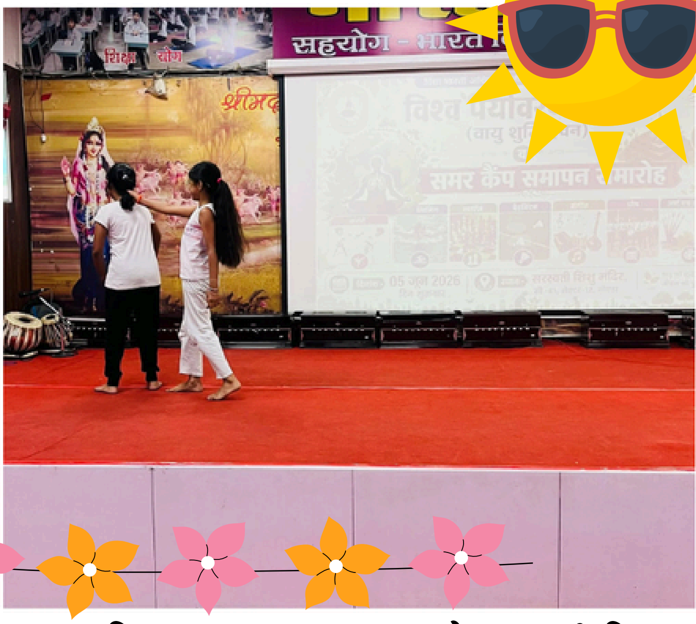

दिनांक - 05/06/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में माननीय अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन कर 10 दिवसीय समर कैंप का भव्य समापन समारोह कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के भैया-बहिनों ने पूरे उत्साह, अनुशासन एवं आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रतिभाओं का मनमोहक प्रदर्शन प्रस्तुत किया। समर कैंप के दौरान भैया-बहिनों ने स्विमिंग, कराटे चेस, क्राफ्ट, योग, बैडमिंटन, खेलकूद एवं विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर सहभागिता की। इन गतिविधियों ने उनके व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता, रचनात्मक चिंतन तथा टीम भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समारोह के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले एवं प्रतिभागी भैया-बहिनों को सम्मानित एवं पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। साथ ही भैया-बहिनों ने कैंप से प्राप्त सीख को अपने शब्दों में व्यक्त किया। अतिथियों ने विद्यार्थियों की लगन, परिश्रम, अनुशासन एवं सृजनात्मकता की भूरि-भूरि प्रशंसा की व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया-बहिनों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

वायु शुद्धि हवन

दिनांक- 05/06/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विश्व पर्यावरण दिवस के पावन अवसर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु वैदिक हवन का आयोजन किया गया। पंडित राघवेंद्र जी के सान्निध्य में संपन्न इस हवन में वायु शुद्धि तथा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रेनू जी (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री अतुल वर्मा जी, श्री कपिल देव जी, अभिभावक बंधु, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी एवं समस्त विद्यालय परिवार की गरिमामयी उपस्थिति रही। हवन के उपरांत भैया-बहिनों द्वारा उत्साहपूर्वक वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्हें वृक्षों के महत्व तथा पर्यावरण संरक्षण में उनकी भूमिका के विषय में प्रेरक जानकारी प्रदान की गई। सभी उपस्थित जनों ने स्वच्छ, हरित एवं प्रदूषणमुक्त वातावरण के निर्माण हेतु अधिक से अधिक वृक्ष लगाने तथा उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। यह आयोजन विद्यार्थियों में प्रकृति प्रेम, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हुआ।

उदयन स्टूडियो उद्घाटन

दिनांक 17 जून 2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विद्यालय के नवीनतम एवं अभिनव उपक्रम "उदयन स्टूडियो" का भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ। यह स्टूडियो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से भैया-बहिनों को फोटोग्राफी, रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा तकनीकी कौशल का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इस गरिमामय अवसर पर श्री डोमेश्वर साहू जी (क्षेत्रीय संगठन मंत्री, विद्या भारती पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र), श्री प्रदीप गुप्ता जी (प्रांत संगठन मंत्री, विद्या भारती मेरठ प्रांत) एवं विद्यालय के संरक्षक श्री प्रताप मेहता जी का विशेष मार्गदर्शन एवं प्रेरणादायी उद्बोधन प्राप्त हुआ। अतिथियों ने उदयन स्टूडियो को विद्यार्थियों में सृजनशीलता, आत्मविश्वास एवं आधुनिक तकनीकी दक्षता के विकास का सशक्त माध्यम बताया।

विश्व योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विद्यालय में भैया-बहनों एवं आचार्यों ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास कर स्वस्थ जीवन का संदेश दिया। योग के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर सभी ने नियमित योग करने का संकल्प लेकर "करें योग, रहें निरोग" का संदेश समाज तक पहुँचाया।

बताओ तो जानें

Name: ______________________________ Date: ____________________

SUMMER IS HERE

Word Search

DIRECTIONS: Find and circle the vocabulary words colors in the grid. Look for them vertically and horizontally.

S	J	C	A	M	P	M	C
W	G	L	A	M	C	H	M
I	J	M	M	P	Y	Y	Z
M	V	K	B	E	A	C	H
S	U	M	M	E	R	M	S
M	H	O	T	E	B	H	U
K	O	I	G	U	F	U	N
W	A	T	E	R	O	Q	E

BEACH

CAMP

FUN

HOT

SUMMER

SUN

SWIM

WATER

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1. 31 मार्च 2026 तक भारत की सौर ऊर्जा कितने गीगाबाइट हो गई है।
2. विश्व स्वास्थ्य दिवस पर किसका संदेश दिया जाता है।
3. बाल गंगाधर तिलक का जन्म कब और कहां हुआ था।
4. चंद्रशेखर आजाद जी का बलिदान दिवस कब मनाया जाता है।
5. गुरु पूर्णिमा का विशेष संबंध किस महर्षि से संबंधित है।
6. वायु शुद्ध हवन द्वारा क्या संदेश दिया गया।
7. 17 जून 2026 को विद्यालय में कौन-सा नवीनतम एवं अभिनव उपक्रम संपन्न हुआ।
8. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विद्यालय द्वारा क्या संदेश समाज तक पहुंचाया गया।
9. उदयन स्टूडियो विद्यार्थियों के लिए किसका माध्यम है?
10. पर्यावरण दिवस पर भैया बहनों को क्या जानकारी प्रदान की गई।
11. आज के समय में पढ़ाई के साथ-साथ किन कौशलों की आवश्यकता बताई गई है?
12. बचपन से Audio-Video की शिक्षा बच्चों को क्या बनाती है?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे I

कक्षा- तृतीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को

ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 25 व 26 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 20 जुलाई 2026 तक भेजने होंगे I